नेपाल में महाप्रलय की पहली रात

• संदर्भ- भूकंप के बाद पड़ोसी देश में राहत और बचाव अभियान की जरूरत

आचार्य बालकृष्ण

आयुर्वेद मनीषी,
पंतजलि योगपीठ

भूकंप आने से क्षणभर पहले तक काठमांडू के टुंडी खेल मैदान में योग शिविर के तहत एक कार्यक्रम चल रहा था। स्वामी रामदेवजी ने सबको योग व अध्यात्म की बातें बताई। जैन संत महाश्रमणजी भी साधना की चर्चा करते रहे। कार्यक्रम समाप्त हुआ। स्वामी रामदेव से लोग मिल रहे थे। अचानक जोर-जोर की आवाजें आने लगीं। स्वामीजी व कुछ लोग गाड़ी के पास पेड़ को पकड़े खड़े थे। सामने स्थित बाल मंदिर का आधा हिस्सा टूटकर गिर चुका था। कुछ सेकंड में ही चारों तरफ भयावह नजारा था। लोहे के कॉलम में खड़ा टीनशेड वाला पंडाल धराशायी हो गया। हमारे सामने मृत्यु तीन रूपों में दिख रही थी, टूटता-पंडाल , उखड़ता पेड़, गिरती-बिल्डिंग। पर पेड़ रक्षक बन गया, जिससे पंडाल कुछ कदम दूरी पर ही गिरा था। स्वामी रामदेव और हम इस प्राकृतिक कोप से बाल-बाल बचे।

इस भयानक त्रासदी में हजारों लोग असमय काल कवलित हो गए। उस भयानक व खौफनाक दृश्य को हमें भी अपनी आंखों से देखना पड़ा। हम भी इस हृदय विदारक घटना के प्रत्यक्षदर्शी बने। टुंडी खेल मैदान में लगभग 5 लाख फुट मैट बिछा हुआ था। लोगों ने उसकी झोपड़ी बनानी शुरू कर दी थीं। जब यह बात स्वामी रामदेव को पता चली तो उन्होंने संपूर्ण पांडाल व मैट आदि को जनता के लिए दे दिया। ग्राउंड में लाइट व तंबू की व्यवस्था अपने आप हो गई थी। शाम होते-होते हमारे हजारों स्वयंसेवक काठमांडू में अनेक स्थानों पर पहुंचकर पीने के पानी की व्यवस्था करने के अलावा चिवड़ा, आलू का झोल, फल, बिस्कुट जैसे खाद्य पदार्थों का वितरण शुरू कर चुके थे। एक बार में सैकड़ों की संख्या में मोबाइल फोन चार्ज किए जा रहे थे। पतंजलि आयुर्वेद केंद्र नेपाल से राहत सामग्री की व्यवस्था की गई। हरिद्वार और लखनऊ से कई ट्रकों में फल, बिस्कुट, पानी, तिरपाल सहित अन्य राहत सामग्री मंगवाने का इंतजाम किया गया। पतंजलि के परिचित डॉक्टरों द्वारा तत्काल एक करोड़ रुपए की जीवन रक्षक दवाइयों को मंगाने का आदेश भी दिया गया।

स्वामी रामदेव ने तत्काल सभी प्रभावित जिलों में जाने के लिए टीमों का गठन कर दिया गया ताकि राहत कार्य यथासंभव शीघ्र शुरू किया जा सके। शिविर स्थानों पर भोजन उपलब्ध कराने, सुबह आस-पास के लोगों को योग भी सिखाने, सुदूरवर्ती क्षेत्रों में लोगों को खाद्य सामग्री, टेंट, कंबल, मैट आदि उपलब्ध कराने के लिए कार्यकर्ताओं को कहा गया। रक्तदान की भी व्यवस्था की गई। स्वामीजी ने घोषणा की कि आपदा में मृत परिवार के कम से कम 500 बच्चों की शिक्षा, आवास, भोजन आदि की व्यवस्था पतंजलि योगपीठ करेगा। काठमांडू के पास धूलिखेल में आयुर्वेद कॉलेज के भवन को ही इस कार्य के लिए दे दिया गया।

सैकड़ों स्वयंसेवक टुंडी खेल मैदान में रातभर बैठे रहे। रात गुजर गई पता भी नहीं चला। चारों ओर हाहाकार व क्रंदन ही सुनाई पड़ता था। बड़ी संख्या में इमारतें ध्वस्त हो चुकी थीं। न जाने कितने लोगों की जानें जा चुकी थीं। कोई अंदाज नहीं लग पा रहा था। पानी की सप्लाई भंग हो गई थी और बिजली गुल हो चुकी थी। सुरक्षा और आश्रय देने वाले भवनों से अब लोगों को डर लगने लगा था। यही वजह रही कि सारा शहर जमीन पर खुले आसमान के नीचे आ गया था। जिसे तिरपाल, पॉलीथीन या किसी तरह का कोई आश्रय बनाने की जुगाड़ हो गई तो ठीक अन्यथा सब भगवान-भरोसे थे। घायल अस्पतालों में पहुंच रहे थे जबकि गंभीर घायलों को कार्यकर्ता अस्पतालों में ले जा रहे थे। न जाने कितने घायल व्यक्ति तो मलबे के नीचे अंतिम श्वास गिन रहे थे। किस तरह तड़प-तड़पकर हजारों लोगों ने अपने प्राण त्यागे होंगे, सोचकर आत्मा कांप जाती है। लगता था, लोगों के मार्मिक क्रंदन से पत्थर भी पिघल उठे थे। शहर के नजदीक तो लोगों को मदद मिल गई, लेकिन दूर पहाड़ों में बसे लोगों का क्या हाल होगा? पीड़ा से गहराए बीहड़ वन में भटकते-भटकते मन व्याकुल था। यह सोचते-सोचते न जाने कब सूर्य की लालिमा दिखाई देने लगी। हम लोग फिर अपने दिल की पीड़ा को शांत करने के लिए सेवा-योजना बनाने में जुट गए।

हमें इस बात का संतोष है कि भूकंप के इतने दिनों बाद भी पतंजलि योगपीठ के हजारों कार्यकर्ता रात-दिन एक करके सेवा में जुटे हैं। आपदा पीड़ितों के लिए पतंजलि द्वारा 5 करोड़ रुपए की धनराशि का सहयोग किया जा चुका है। बचाव राहत फिर पुनर्निर्माण व आपदा ग्रस्त लोगों के जीवन को व्यवस्थित करने में महीनों नहीं वर्षों लगेंगे। अभी तो ऐसे लोगों की संख्या भी हजारों में है, जिन्हें हेलिकॉप्टरों से चिकित्सा के लिए काठमांडू लाया गया। अब उनका न कोई घर है न उनकी प्रतीक्षा करते परिजन व बच्चे अब वे हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होकर जाएं तो जाएं कहां? ऐसे सभी लोगों के लिए पतंजलि योगपीठ की तरफ से काठमांडू व कम्भ्रे जिले के बनेपा में आवास तथा भोजन की व्यवस्था की जा चुकी है। सेवा का कार्य लगातार जारी है। जब वे घर जाने के लिए तैयार होंगे तब, उन्हें तम्बू, राशन, कुछ नकद राशि देकर भेजा जाएगा ताकि नया जीवन शुरू करने के लिए कुछ तो आधार हो। ऐसे लोगों की जिम्मेदारी भी पतंजलि योगपीठ लेगा।

इस दैवीय आपदा में भारत सरकार द्वारा तत्काल राहत व बचाव कार्य शुरू करने की प्रशंसा की जानी चाहिए। एनडीआरएफ के हमारे जवान व चिकित्सक रात-दिन एक करके सेवा में लगे हुए हैं। अनेक देशों की सरकारों ने इस महाआपदा में सहयोग का हाथ बढ़ाया है। हजारों लोगों ने किसी के आने की प्रतीक्षा की होगी कि कोई आएगा हमें भी बचाएगा। जब काल दैव स्वयं ही क्रूर बन गया हो तो आशा करते भी तो किससे? असीम सामर्थ्य शाली के प्रकोप को सीमित सामर्थ्य वाला मनुष्य कैसे रोक पाता? सत्य है जब देव ही रुष्ठ हो जाए, तब मानव के पास लाचारी के अलावा रह भी क्या जाता है। फिर भी हमारी जिम्मेदारी है कि जिन्हें बचा पाना संभव है उन्हें बचाने की भरपूर कोशिश करें।

आपदा की इस घड़ी में हम सबका कर्तव्य है कि राजनीतिक व भौगोलिक सीमाओं से ऊपर उठकर हम पीड़ितों की सेवा के लिए आगे आएं। मदद के लिए की गई कोई भी कृति छोटी नहीं होती। अपनी क्षमता के अनुसार की गई सहायता बहुत फर्क ला देती है। इसका हमने इस आपदा में गहरा अनुभव लिया है। पतंजलि योगपीठ ने अपनी ओर से पीड़ितों की सेवा और राहत के लिए अभियान चला रखा है। योगपीठ की ओर से हम आप सबसे आह्वान करते हैं कि इस महात्रासदी में तन-मन धन से सहयोग करने के लिए आगे आएं।

काठमांडू के टुंडी खेल मैदान में योग शिविर के तहत एक कार्यक्रम के बाद लोगों से बातें कर रहे थे कि जोर-जोर से आवाजें आने लगीं। कुछ ही सेकंड में चारों तरफ विनाश का नजारा था।

बड़ी संख्या में इमारतें ध्वस्त हो चुकी थीं। न जाने कितने लोगों की जानें जा चुकी थीं। पानी की सप्लाई भंग हो गई थी और बिजली गुल हो चुकी थी। सुरक्षा और आश्रय देने वाले भवनों से अब लोगों को डर लगने लगा था।

असीम सामर्थ्य शाली के प्रकोप को सीमित सामर्थ्य वाला मनुष्य कैसे रोक पाता? हमारी जिम्मेदारी है कि जिन्हें बचा पाना संभव है उन्हें बचाने की भरपूर कोशिश करें।